

8. 40. 99, 7. AV. 20. 128, 11. वि गोकुश्यामाप्रव्रनं च दर्विः 12, 3, 36. तीर्थम्. स-
निलम् MBh. 1, 7847. 13, 1694. 1696. Draup. 6, 22. R. 2, 48, 9. 3, 73, 38.
ऋकृतटागानि विगाह्ये गनेन्द्रवत् 6, 73, 16. Ragh. 14, 76. 19, 9. विगा-
ह्यमानो सरयू च नौभिः 14, 30. विगाह्य तस्मिन्सरमि MBh. 3, 6036. Suçr.
2, 186, 16. Bhāg. P. 8, 2, 24. श्येनो यर्म वि गोकुशे RV. 9, 67, 14. दुःखिनेह
विगाह्यते प्रचकिते राज्ञो गृहे वार्धिवत् Pañkāt. 1, 420. विगाह्य मुमहृद-
नम् R. 2, 34, 2. 3, 7, 4. कथं वानरमात्रेण लङ्का ख्यं विगाह्यतुम् । शक्या
5, 81, 9. विषयात् व्यगाह्य 2, 49, 2. गिरिम् MBh. 3, 11343. समापद्यं वि-
गाहे 2, 2348. शब्दगुणम् — पदं (d. i. आकाशं) विमानेन विगाह्यमानः (ह-
रिः) Ragh. 13, 1. चर्म विगाह्य शत्रूणाम् MBh. 3, 10832. 11333. 4, 1175.
1671. 7, 4883. यदमानुषं विगाह्याः als du den Unmenschlichen durchbohrtest,
eig. mit deiner Waffe in ihn eindringest AV. 20, 128, 12. (वनस्पतिः) अत्तर्भू-
मिं विगाह्यते मूलैः Suçr. 4, 270, 5. sich vertiefen in: विगाह्यागाधगम्भीराम्
उशतीम् Bhāg. P. 3, 16, 14. einbrechen, von der Nacht: निशा व्यगाह्यत्
MBh. 5, 7246. — partic. विगाह 1) eingetaucht in, sich badend in: अ-
त्तर्ले विगाहः (पर्वतः) R. 5, 7, 39. — 2) worin man sich taucht, badet:
मकरैर्नागभोगैश्च विगाहाः (जलराशयः) R. 5, 74, 31. विगाहा हेमपर्वतैः —
नानिन्यः 4, 44, 87. — 3) sich eine Bahn gebrochen habend, eingebrochen
seiend, Platz ergriffen habend: तस्य तद्विद्यमस्त्रं विगाहं चित्रमस्यतः
MBh. 4, 2072. विगाहं रजनीमूले 3, 1821. विगाहायो रजन्धाम् 7, 8313. Siv.
5, 66, 73. तस्मिन्मये विगाहं Ragh. 16, 53. विगाहमन्मथः 19, 9. विगा-
हे युधि संवाधे वेत्स्यसे माम् MBh. 5, 2776. — Vgl. अत्तर्विगाहन, उ-
र्विगाह, उर्विगाह्य.

— प्रवि sich tauchen in, sich hineinbegeben in: प्रविगाह्योदकं तीर्थं
वनानि फलवन्ति च R. 6, 16, 2. स्वमाश्रमं तं प्रविगाह्य 3, 63, 19.

— सम् eindringen in, sich hineinbegeben in: समगाह्यिष्ठ चाम्बरम्
Bhāg. 13, 59.

गाह्यं (von गाह्) 1) adj. f. ई sich eintauchend, badend gaṇa पचादि zu
P. 3, 1, 134. उदकगाह्य, उदगाह्य (unter d. Ww. wohl fälschlich als nom.
act. aufgefasst) P. 6, 3, 60. — 2) m. Tiefe, das Innere: (पीयूषं) मूढा गा-
हादिव धा निर्धुन्त RV. 9, 110, 8.

गाहन (wie eben) n. das Eintauchen, Baden Daçak. 173, 14.

गाहनीय partic. fut. pass. von गाह् sich tauchen in Daçak. 173, 14.

गिद् interj. (voc. ?): गिदेष ते रथः Pañkāv. Br. 1, 7. Lāj. 2, 8, 11.

गिध gaṇa मूलविभुजादि zu P. 3, 2, 5, Vārt. 2. Wohl गोध zu lesen.

गिन्दुक m. = गेन्दुक = कन्दुक Spielball H. 689, Sch.

1. गिर, गिरति s. गर.

2. गिर (= 1. गर) 1) adj. anrufend: सकृन्नाश्रानां पुरुषन्था गिरि दत्त
RV. 6, 63, 10. — 2) f. a) Anrufung, Ruf; Spruch; Preis, Lob Naigh. 1,
11. त्वां स्तोमां अवीवृध्नामुक्त्वा शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु नो गिरिः RV. 1, 3,
8. काम्यै देववृष्ट्यै च भामिने गीः 77, 1. अग्निं यज्ञं हविषा तना गिरा
2, 2, 1. गीर्भृष्टा वयं वर्धयामो वचोविदः 4, 91, 11. गीर्भृष्टात्तं ऋमिषम्
9, 9. 4, 10, 4. 5, 53, 16. 6, 34, 1. नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गोर्भिरीमिह
3, 37, 3. गिरा य एता युनञ्जरी ते 7, 36, 4. प्र ये दिवो बृहत्तः प्रपिबिरे
गिरा 5, 87, 3. तत्रैतान्पर्वतान्प्रिगीर्भिर्द्धीं अकल्पयत् AV. 13, 1, 53, 54.
1, 15, 2. 2, 5, 4. 7, 110, 3. Die Marut heißen: सूनवो गिरिः RV. 1, 37, 10.
— b) Rede, Sprache, Worte AK. 1, 1, 5, 1. Traik. 1, 1, 115. H. 241. Med.
r. 23. प्राणेन क्युतिष्ठति वागीर्वीचा ह गिर इत्याचलते Kañd. Up. 1, 3, 6.

येन धैता गिरः पुंसो विमलैः शब्दवारिभिः Çikshā 38. तस्मै नाकुशलं ब्रूयान्
शुक्ला गिरमीरयेत् M. 11, 35. मानुषीं गिरं कृत्वा menschliche Sprache an-
nehmen N. 1, 25. शास्त्रयञ्जनाया गिरा 8, 12. वाय्वसदिग्धया गिरा । वि-
ललाप 12, 75. शक्यसे ता गिरः सम्यक्कर्तुं मयि 11, 6. तां गिरां करुणां श्रु-
त्वा Daç. 1, 32. भवतीनां सूनवैव गिरा कृतमातिष्ठम् Çik. 13, 1. योषतो
मधुरगीर्भिः 68, 13, v. l. निवर्तितस्तस्य गिरङ्कुशेन (die Grammatiker ver-
langen गिरङ्कुश, die ältere Sprache kennt aber nur die Kürze) मङ्गा-
ज्ञो मत इवाङ्कुशेन MBh. 4, 2105. गिरा प्रभविल्लुः (vgl. गीष्पति) Bein. Brhas-
pati's. des Planeten Jupiters, Varāh. Brh. S. 46, 5(6). — c) Stimme: द-
दौ स्त्रीणां गन्धर्वश्च शुभो गिरम् Jāśn. 1, 71. इत्युक्तं दिव्यया गिरा Vid.
139. श्रुत्वा गिरा व्याहृतां मृगाणाम् Draup. 6, 2. मेघगम्भीरगीः MBh. 3,
1617. — d) Sarasvatī, die Göttin der Rede AK. H. an. Med.

3. गिर (= 2. गर) adj. verschlingend in गरगिर, मुर्कार्गरि.

1. गिर (von 2. गर) adj. verschlingend Vop. 26, 32.

2. गिरं am Ende eines adv. comp. = गिरि Berg P. 5, 4, 112. Vop. 6,
68. अनुगिरम् am Berge Ragh. 13, 49.

गिरा (von 2. गिर, f. Rede Traik. 1, 1, 115.

गिरावृध् (गिरा, instr. von 2. गिर, + वृध्) adj. an Anrufung sich
ergötend: तं वा हिन्वन्ति वेधसः पर्वमान गिरावृधम् RV. 9, 26, 6.

गिरि 1) m. a) Hügel, Berg, Gebirge; Höhe Uṇ. 4, 144. AK. 2, 3, 1.
H. 1027. an. 2, 409. fg. Med. r. 23. fg. अत्रा इन्द्रस्य गिर्यश्चिदृषाः RV. 6,
24, 8. 8, 15, 2. 4, 20, 6. सानुं गिरिणाम् 6, 61, 2. 8, 46, 18. वृन्केशाः 5, 41.
11. गिरिर्भृष्टिः 4, 56, 3. 61, 14. 63, 1. शुचिर्वती गिरिभ्य आ संमुद्रात् 7, 95.
2. 8, 32, 4. 66, 6. Häufig verbunden mit dem adj. gebrauchten पर्वतः
वधिः स पर्वतो गिरिः AV. 4, 7, 8. गिर्यंस्ते पर्वता हिन्वन्तः 12, 1, 11. 6,
12, 3. 17, 3. 9, 1, 18. पर्वतं गिरिं प्र च्योवन्ति यामभिः RV. 1, 56, 4. (नि,
निहीतं पर्वतो गिरिः 37, 7. 8, 33, 5. गिरिमात्रं adj. Bergesumfang haben
Çat. Br. 1, 9, 1, 10. Nach Naigh. 1, 10 und den Comm. bedeutet गिरि an
vielen Stellen Wolke, während man überall mit Berg oder Höhe aus-
reicht. Adjectivisch scheint das Wort in der Stelle दिवः शर्धाय शुचिं
मनीषा गिरयो नाप (etwa wie Bergwasser; vgl. गिरिः उया अस्पृधन्
RV. 6, 66, 11) gebraucht zu sein, wofern hier der Text richtig überlie-
fert ist. — यावत्स्यास्यति गिर्यः सरितश्च मकीतले R. 1, 2, 39. N. 12, 18.
Ragh. 2, 13. पश्याधःखने मूढ गिरयो न पतति किम् Çrngārat. 19. म-
हागिरि Vid. 166. हिन्वन्दिभ्योः — गिर्योः M. 2, 22. हिन्वतो गिरिः
Çik. 61, 6. Accent eines auf गिरि ausgehenden comp. P. 6, 2, 94. — b)
Bez. der Zahl acht wegen der acht Berge, die sich um den Meru la-
gern (vgl. VP. 171. fg.) Çat. 38. — c) Spielball (vgl. गिरिक, गिरगुड)
H. 688. H. an. Med. Viçva im ÇKDr. — d) eine best. Augenkrankheit (?)
H. an. Med. गिरिणा काणाः, गिरिकाणाः P. 6, 2, 2, Sch. Uṇ. 4, 144, Sch.
— e) eine best. schlechte Eigenschaft des Quecksilbers: नामो वङ्गे मलो
वङ्गिश्चास्यत्यं च त्रिषं गिरिः । असक्त्वाग्निर्महदाया निसर्गात्पारदे स्थिताः ॥
Ratnāv. im ÇKDr. — f) = गैर्यक (?) H. an. — g) ehrendes Beiw.
einer Art von Saṃjāsīn (संन्यासिनां पद्धतिविशेषः) ÇKDr. a title
given to one order of the Dāsnāmi Gosains (s. Wils. a Gloss. of jud.
and rev. terms u. d. W. Gosvāmi) Wils. Vgl. 3. — h) N. pr. eines
Sohnes des Çvaphalka (vgl. गिरित्तिप) VP. 435. — 2) f. a) (von 2. गर)
das Verschlingen gaṇa कृष्यादि zu P. 3, 3, 108, Vārt. 8. AK. 3, 3, 11.